शिक्षा और समाज

(EDUCATION AND SOCIETY)

संपादक
प्रसादराव जामि

Published by:
Rajiv Kumar Sharma
JTS Publications
V-508, Gali No. 17, Vijay Park Delhi-110053
Mob.08527460252, 9990236819*
Email: jtspublications@gmail.com

शिक्षा और समाज

संपादक
प्रसादराव जामि

© Publisher
First Edition, 2025
ISBN 978-93-49496-05-7
Price : 1500/-

वैधानिक चेतावनी

पुस्तक के किसी भी अंश के प्रकाशन- फोटोकॉपी, इलेक्ट्रॉनिक माध्यमों में उपयोग के लिए लेखक/ संपादक/ प्रकाशक की लिखित अनुमति आवश्यक है। पुस्तक में प्रकाशित शोध-पत्रों में निहित विचार तथा संदर्भों का संपूर्ण दायित्व स्वयं लेखकों का है। संपादक/ प्रकाशक इसके लिए उत्तरदायी नहीं है ।

Cover Design : Rajiv Sharma
Laser typeset by : Santoshi Computers, Delhi-53

PRINTED IN INDIA
Published and Printed by JTS Publications, Delhi-110053

अनुक्रमाणिका

क्र.	लेख का नाम /लेखक	पेज
	सम्पादकीय- प्रसादराव जामि	05
1.	शिक्षा और समाज **प्रसादराव जामि**	13
2.	छात्रों पर सोशल मीडिया के मनोवैज्ञानिक प्रभाव **डॉ. मयुर वासुरभाई भम्मर**	19
3.	विद्यालय एक सामाजिक संस्था के रूप में **डॉ. हरीश कुमार पाण्डेय**	26
4.	नयी शिक्षा नीति - 2020 **प्रवीण कुमार जामि**	30
5.	सोशल मीडिया और छात्रों पर प्रभाव **डॉ. डी. डी. देसाई**	37
6.	शिक्षा में कृत्रिम बुद्धिमत्ता का उपयोग: एक समग्र दृष्टिकोण **V NV PADMAVATHI**	40
7.	राष्ट्रीय नयी शिक्षा नीति 2020 **लक्ष्मी प्रसन्ना जामि**	42
8.	सोशल मीडिया का छात्र जीवन पर प्रभाव **जहांगीर आलम, डॉक्टर उम्में सलमा**	46
9.	डिजिटल युग में मीडिया और सामाजिक परिवर्तन:एक समाजशास्त्रीय अध्ययन **डॉ. मिनाक्षी कुमारी रवि**	51
10.	राष्ट्र निर्माण में नारी शिक्षा **सावित्री जामि**	55
11.	शिक्षा में आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (AI) का प्रयोग **डॉ. फखरे आलम**	58
12.	भारतीय संस्कृति के संरक्षण, हस्तानान्तरण तथा संवर्धन में शिक्षा की भूमिका **डॉ. भुपेन्द्र कौर**	63
13.	विशेष आवश्यकता वाले बच्चों की शिक्षा **आशीष कुमार त्रिपाठी**	68
14.	डिजिटल परिवर्तन का समाज में नेतृत्व विकास पर प्रभाव **डॉ. आशा बाला**	75

15. शिक्षा द्वारा संस्कृति का संरक्षण और स्थानांतरण 81
डॉ. ज्योतिन्द्र कुमार पाठक

16. शिक्षक की सामाजिक स्थिति 93
वागीश दुबे

17. विद्यालय एक सामाजिक संस्था के रूप में 97
नीलम रानी सक्सैना

18. वैश्वीकरण और शिक्षा 99
डॉ अरुण कुमार मिश्र

19. वृद्धा आश्रम एवं वृद्ध महिलाओं की समस्या एक समाजशास्त्रीय अध्ययन 105
मुनमुनजोठे, डॉ. शैलजा दुबे

20. शिक्षा और सामाजिकीकरण : एक व्यापक समीक्षा 109
Dr. Rekhaa Dhyani

21. बिजनौर जिले की चमार जाति का सामाजिक-राजनीतिक इतिहास (1900–1950) 115
Dr. Om Prakash Singh, Rachana Rani

22. शिक्षा और सामाजिक गतिशीलता: भारत का समाजशास्त्रीय विश्लेषण 131
प्रतिभा मौर्य

23. शिक्षा का समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण 135
मीनाक्षी सैनी

24. भारतीय शिक्षा प्रणाली में आमूल परिवर्तन: एक विश्लेषणात्मक अध्ययन 138
दीक्षा

25. सोशल मीडिया, और छात्रों पर प्रभाव : एक विचार 144
सुमित रंगा

26. शिक्षा और समाज: एक विश्लेषणात्मक आलेख 148
डॉ. मनीषा पाहुजा

27. राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 की प्रासंगिकता और चुनौतियाँ 150
डॉ. सुरेश कुमार निराला

28. शिक्षा और समाज 155
मधु बावलकर

29. राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के अनुरूप मूल कर्तव्यों का शिक्षण प्रशिक्षण 159
आनंद कुमार जैन

30. शिक्षा और समाजीकरण 163
डॉ. समीना कुरैशी

31. शिक्षा और समाज
भाइगेश्वर पोगाग 168

32. शिक्षक की सामाजिक स्थिति : एक विश्लेषणात्मक लेख
पूनम यादव प्रवक्ता 171

33. शिक्षा और समाज
डॉ- अनीता देवी 174

34. वर्तमान परिपेक्ष्य में शिक्षकों की बदलती भूमिका और चुनौतियों का विश्लेषणात्मक अध्ययन
डॉ० विभा कुमारी 177

35. शिक्षा में आत्मनिर्भरता : एक अध्ययन
राजबीर सिंह 182

36. ई-समाज (E-SOCIETY)
SUMIT KUMAR 185

37. उच्च शिक्षा और रोजगार के अवसर
डॉ. शिवदयाल पटेल 190

38. संस्कृति एवं सभ्यता तथा संस्कृति के हस्तांतरण में शिक्षा की भूमिका
डॉ. प्रदीप कुमार पाण्डेय 193

39. सोशल मीडिया और छात्रों पर प्रभाव: एक दार्शनिक दृष्टिकोण
अंशिका 197

40. उच्च शिक्षा और रोजगार के अवसर: एक विश्लेषणात्मक अध्ययन
डॉ. दर्शना देवी 205

41. राष्ट्रीय शिक्षा नीति **2020:** एक अविस्मरणीय क्रांतिकारी बदलाव
प्रिन्स कुमार 212

42. शिक्षा के क्षेत्र में कृत्रिम बुद्धिमता - संभावनाओं से भरी चुनौतियां
डॉ. संदीप कुमार श्रीवास्तव 218

43. शिक्षा में आर्टिफिशियल इंटेलिजेन्स का उपयोग: एक दार्शनिक अध्ययन
मनीषा भूषण 222

44. जशपुर पहाड़ी कोरवा - जनजीवन रीति-रिवाज परंपराएं (छत्तीसगढ़ की विशेष पिछड़ी जनजाति)
डॉ मिथलेश कुमार पाठक 231

45. अनवरत समाजीकरण एवं सांस्कृतिक स्थानांतरण में शिक्षा की भूमिका
महेन्द्र प्रताप सिंह 238

46. शहरी और ग्रामीण शिक्षा में अन्तर: एक अध्ययन 241
डॉ. जितेन्द्र पंडित, डॉ. विभा कुमारी

47. योग विद्या में सामाजिक सद्भाव (भारतीय ज्ञान प्रणाली के आधार स्तंभ – परंपरा, दृष्टि और लौकिक प्रयोजन के संदर्भ से) 247
डॉ रेनू चौधरी

48. समाज के विकास में शिक्षा की भूमिका 254
डॉ. महेन्द्र सिंह, डॉ. अजय कुमार, सुरेश कुमार पाण्डेय

49. विज्ञान शिक्षा में परिवेश की सार्थकता 257
निर्मल कुमार न्योलिया, शोभा न्योलिया

50. शिक्षा व्यवस्था और समाजिक स्थिति - एक दृष्टिकोण 262
Dr. B. Laxmi

51. भक्ति, समाज और शिक्षा : वैश्वीकरण की पृष्ठभूमि में राधावल्लभ सम्प्रदाय का काव्य एवं संगीत 265
यतेन्द्र द्विवेदी, डॉश्रुति गोखले .

52. शिक्षा, समाज और वैश्वीकरण : वाल्मीकि रामायण एवं तुलसीदास कृत रामचरित मानस में रामराज्य की प्रासंगिकता 270
कुसुम शर्मा, डॉ. श्रुति गोखले

53. संघ की राजभाषा नीति और सामाजिक चेतना 275
राजेश कुमार, डॉ. धीरेंद्र शुक्ल, डॉ. रचना तैलंग

54. शिक्षा और समाज में "तमसो मा ज्योर्तिगमय" की ऋषि भावना : कवि डॉ. विनोद निगम और रमेश दुबे के संदर्भ में 279
आहना शंकर दुबे, डॉ. श्रुति गोखले

55. शिक्षा और समाज 283
श्रीकांत जयसिंग देसाई

56. शिक्षा और समाज एक मानविकी दृष्टिकोण 286
प्रो. (डॉ.) प्यारेलाल आदिले

57. शिक्षा और समाज में अंतर्संबंध: एक विश्लेषणात्मक अध्ययन 293
डॉ. कुमकुम श्रीवास्तव

58. शिक्षा और समाज 298
डॉ. इन्दु कुमारी

59.	शिक्षाशास्त्रीय परिप्रेक्ष्य में नैतिक मूल्यों के विकास में अभिभावकों की भूमिका: परिवर्तन, चुनौतियाँ, मनोवैज्ञानिक प्रभाव एवं दार्शनिक समाधान **डॉ. इन्दु रानी सिंह**	300
60.	The Evolution of Critical Pedagogy: Paulo Freire **Dr. Mohit Kumar Tiwari**	307
61.	Motivation and Confidence of Students: Pillars of Academic and Personal Success **Dr.A.Srinivasa Murthy, Dr.Y.Lalitha Kumari**	316
62.	Education : The Foundation Of Society **D.P. Kori , Bharti Kori , Lovely Kori**	320
63.	Education,Training and New Annovation **Mrs. Aruna Agrawal**	324
64.	Education and Society **Mrs. Aruna Agrawal**	325
65.	Historical Background and Progression of Vocational Education in India **Mr Saroj Kumar Ojha**	326
66.	Educational Inequality in India **Dr. Deepali Saxena**	335
67.	Inequality in Education **Mrs. Aruna Agrawal**	344
68.	Hidden Curriculum **Dr. Uday Pratap Rao**	345
69.	Education and Social Mobility **Sakshi Patel**	357
70.	Globalization and Its' Impact on Education in India **Prof. B K Patel**	364
71.	Role of Education in Cultural Transmission in Society: An Overview **Dr. Chouleshwar Kumar Chandrakar**	370
72.	Role of Education in National Development: An Indian Perspective **Dr. Triveni Patel**	377
73.	Education and Socialization **Rakhi Chauhan**	383
74.	Nutrition Education and Public Awareness: A Catalyst for Healthier Societies **Ajay Kumar Patel**	389
75.	Society and Agricultural Education: A Sociological Perspective **Amit kumar**	401

12

भारतीय संस्कृति के संरक्षण, हस्तानान्तरण तथा संवर्धन में शिक्षा की भूमिका
Role of Education in Preservation, Transfer and Promotion of Indian Culture

डॉ. भुपेन्द्र कौर, सहायक प्राध्यापक, शिक्षागास्त्र विभाग
स्कूल ऑफ एजूकेशन एण्ड ह्यूमैनिटीज, आईएफटीएम विश्वविद्यालय, मुरादाबाद (यू0पी0)

प्रस्तावना–प्रत्येक बालक का जन्म दोहरी विरासत के साथ होता है–जैविक और सांस्कृतिक। अपनी जैविक विरासत से उसे अपनी शरीरिक विशेषताएँ, मानसिक क्षमता और आधारभूत आवश्यकताएँ प्राप्त होती हैं। उसे अपनी सांस्कृतिक विरासत, उस समाज से प्राप्त होती है, जिसमें उसका जन्म और पालन–पोषण होता है। बालक की शिक्षा में उसकी सांस्कृतिक विरासत का उतना ही महत्वपूर्ण स्थान हैं, जितना कि उसकी जैविकीय विरासत का। इस पर प्रकाश डालते हुए **वेरको** व **अन्य** (Verco and Others) ने लिखा हैं–**"यद्यपि समाजशास्त्रियों की खोजों ने सिद्ध कर दिया है कि संस्कृति जन्मजात न होकर सीखी जाती है, फिर भी इसके सीखने को इतना अधिक महत्व दिया जाता है, कि जन्मजात न होकर अवहेलना नहीं की जा सकती है।"**

साधारण भाषा में संस्कृति का अर्थ एक समाज के उत्तम व सुन्दर विचारों, कृतियों तथा व्यवहार के तौर–तरीकों से लिया जाता है। साहित्यकारों ने संस्कृति का अर्थ सौन्दर्य और आकर्षण उत्पन्न करने वाले तत्वों का मिश्रण लिया है। जो व्यक्ति धर्म, सदाचार, नैतिकता, नम्रता, उच्च प्रकार की पसन्द रखता था उसको संस्कृत व्यक्ति कहा जाता था।

हर्स्कोविट्ज (Herskovits) के अनुसार, "पर्यावरण का वह भाग जो मानव द्वारा बनाया जाता है, संस्कृति होता है।"

संस्कृति और समुदाय, समाज या देश की अनुपम धरोहर होती है। उसका निर्माण सैकडो हजारों वर्षो के दौरान असंख्य लोगों के चिन्तन, क्रियात्मकता तथा सहयोगी व्यवहार और कार्यो से होता है। उसमें उस समुदाय की बनायी सभी महत्त्वपूर्ण कृतियों में बौद्धिक, नैतिक, सौन्दर्यात्मक, तकनीकी तथा व्यावहारिकता का समावेश होता है। संस्कृति में उस विशेष भौगोलिक क्षेत्र में रहने वालों के बुजुर्गो ने कैसे अपने जीवन की चुनौतियों का सामना किया था, अपनी समस्याओं के समाधान ढूँढ निकालक थे तथा अपना जीवन एक विशेष ढंग से चलाया था एवं कैसे नयी–नयी उपयोगी विधियों, वस्तुओं तथा सिद्धान्तों का निर्माण किया था, वह सब कुछ होता है। प्रत्येक संस्कृति में उस समुदाय के द्वारा विगत समय में निर्मितसुन्दर, उपयोगी, प्रकार्यात्मक वस्तुएँ, भवन, मूर्तियाँ, साहित्य, कलाओं जैसे–संगीत, नृत्य, श्रृगांर भवन निर्माण, भोजन, वस्त्र बनाना आदि होता हैं जिन पर उस समाज के लोगों को गर्व होता है, उनके साथ उनका गहरा भावनात्मक सम्बन्ध होता है। लोग अपनी संस्कृति के लिए आत्म–बलिदान तक करने को तैयार हो जाते है। अपने धर्मग्रन्थों, सांस्कृतिक ग्रन्थों, पूजा–स्थलों, सांस्कृतिक महत्त्व के स्थानों तथा अन्य विशेषताओं और कृतियों को बनाये रखने की गहरी इच्छा रखते हैं। वे उनको जीवन का सर्वस्व व जीवन्त प्रतीक मानते हैं। अन्य लोगों की भी उनमें रूचि होती है।

भारत एक बहुत प्राचीन देश है। इसकी संस्कृति बहुत प्राचीन और गौरवशाली है। अनुमानतः भारतीय संस्कृति 6000 वर्ष पुर्व की है। यद्यपि पुराणों का कहना है कि यह और भी प्राचीन संस्कृति है लेकिन पुरातत्ववेता और इतिहासकार इस दावे को नही मानते। चूँकि आप भारतीय हैं, अतः भारत की संस्कृति के बारे में बहुत कुछ तों जानते है। इस अध्याय में भारतीय संस्कृति के बारे संक्षेप महत्वपूर्ण जानकारी प्रस्तुत की जायेगी।

भारत में संस्कृति के प्रकार

भारत में मुख्य रूप से तीन प्रकार की संस्कृतियाँ पायी जाती हैं–

(1) चिरप्रतिशिठत भारतीय संस्कृतियाँ (Classical or Margi Indian Culture)–यह संस्कृति प्राचीन भारतीय शास्त्रों, यथा–वेदों, उपनिष्दों, गीता, रामायण आदि प्राचीन वैदिक और उत्तर–वैदिक काल की आर्य संस्कृति, जिसे सनातनी या मार्गी संस्कृति कहते हैं, पर आधारित है। इस संस्कृति का द्रविड संस्कृति से लेन–देन भी हुआ था जिससे यह धनी बनी हुई थी।

(2) देशी संस्कृति या क्षेत्रीय संस्कृतियाँ (Deshi or Folk Cultures of India)–विभिन्न क्षेत्रों (Regions) में जो संस्कृति पनपी थी और अब तक चल रही है उसे देशी, क्षेत्रीय या लोक संस्कृति (Folk Cultures) कहते है।

(3) जनजातिय संस्कृतियाँ (Tribal Cultures of India)–विभिन्न जनजातियों की अपनी–अपनी संस्कृतियाँ होती हैं कजन्हे ये बहुत प्राचीन काल से, आर्य सभ्यता से पूर्व से ही रखे हुए है, वे जनजातियाँ संस्कृतियाँ कहलाती हैं। उनके धर्म, अध्यात्म, जीवन–शैली,व्यवहार, रीति–रिवाज और कलाएँ एक दूसरे से भिन्न हैं और बहुत रोचक भी होती है।

जब हम भारतीय संस्कृति की बात करते हैं तो अधिकतर मोटे तौर पर चिर–प्रतिष्ठित या सनातनी या आर्य संस्कृति की ही बात करते हैं जो सभी पर बहुप्रभावी हो गयी है, लेकिन समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण से हमें क्षेत्रीय लोक संस्कृतियों और जनजातीय संस्कृतियों को नहीं भूलना चाहिए एवं उनकी परम्पराओं को भसी समझना और उनको समुचित सम्मा देना चाहिए।

ऐसी स्थिति में शिक्षा की संस्कृति के प्रति बहुत महत्वपूर्ण भूमिका होती है जिसे सभी को विशेषकर शिक्षकों को समझना चाहिए। यह भूमिका तीन प्रकार की होती है–

1. संस्कृति के संरक्षण में शिक्षा की भूमिका–जो संस्कृति हमें या किसी भी देश के समाज या समुदाय को विरासत में मिली है उसे बनाये रखने का काम देश की सरकार के साथ–साथ प्रत्येक नागरिक का भी कर्तव्य हैं इसमें विद्यालय में शिक्षको का दायित्व अधिक हो जाता है कि वह अपने शिक्षार्थीयों को इसका ज्ञान कराये, क्योंकि शिक्षक संस्कृति की प्रत्येक वस्तु, ग्रन्थ, कृति, विचार, भाषा, कला के बारे में जानते है और भली प्रकार शोध करके जानकारी एकत्र कर सकते है वे उसके महत्व को जानते है। शिक्षक हर गाँव, कस्बे, नगर में होते है। वे उनको जानते हुए संस्कृति के संरक्षण में कई तरह के कार्य कर सकते है, जैसे–

- वे स्थानीय इतिहास और परम्परा की खोज कर सकते है। विद्यार्थियों की सहायता से स्थानीय मन्दिरों, किलों, ऐतिहासिक इमारतों, पुराने भवनों या हवेलियों, तालाबों खण्डहरों, के इतिहास और उनसे संबंधित कथा कहानियों, रीति–रिवाजों, परम्पराओं को इक्टठा करा कर पत्र–पत्रिकाओं में छपवाने के लिए प्रेरित कर सकते है। इन सब पर स्वयं या विद्वानों से मिलकर शोध पत्र लिख सकते है और उनके बारे में न केवल अपने स्थानीय समाज को अपितु सारे देश इसकी जानकारी प्रदान कर सकते है।
- वे स्थानीय खण्डरों, किलो, भवनों, तालाबों, कुओं आदि की मरम्मत करवाने के लिए स्थानीय सरकारी विभागों के अधिकारियों, ग्राम सरपंच या प्रधान, पंचायत समिति के अध्यक्ष, जिला प्रमुख, एम. एल. ए. एवं एम. पी. को सूचित कर सकते है, उन पर दबाव डाल सकते हैं।
- वे अपने स्थानीय क्षेत्र के लागों तथा विद्यार्थियों के अभिमावकों से सम्पर्क करके धन एकत्र कके उनकी मरम्मत करा सकते है और उन्हें आगे के लिए सुरक्षित किया जा सकता है।
- वे अपने स्थान या क्षेत्र में पायी गयी किसी भी सांस्कृतिक महत्व की वस्तु, जैसे दुर्लभ मूर्तियाँ, शिलालेख, बर्तन, फर्नीचर, सिक्के, चित्र आदि एकत्र कर सकते हैं और उन्हें अपने विद्यालय के संग्रहालय में रख सकते है जिससे विद्यार्थियों को दिखाकर उनका ज्ञानवर्धन किया जा सकता है।

वे इन्हे जिले के संग्रहालय में भी भेज सकते है जहाँ उनको हमेशा के लिए सुरक्षित रखा जा सकता है।

- कई कस्बों में अभी भी पुरानी पोथियाँ, हस्तलिखित ग्रन्थ, पुराने धार्मिक ग्रन्थ वैद्याक, ज्योतिष, योग सम्बन्धी ग्रन्थ बहुत से पूराने परिवारों में मौजूद है। उनके फोटो खीचे जा सकते हैं या फोटो स्टेट कराकर किसी भी प्रकार से प्राप्त करके उनको पाडुलिपियों के संग्रहालय में भिजवाने की कौशिस करनी चाहिए। नई दिल्ली में जनपथ पर ऐसी दुर्लभ पाण्डुलिपियों का राष्ट्रीय संग्रहालय है।
- उनको छपवाने के लिए सरकार व अन्य सम्पन्न लोगों से सम्पर्क करना चाहिए ताकि जनता को उनकी जानकारी हो सके।
- पुराने घरानों परिवारों में अभी बहुत–सी प्राचीन सांस्कृतिक महत्त्व की वस्तुएँ है जैसे– सिक्के, कार्ड, शिलालेख, ताम्र पत्र–पत्रिकाएँ, सोने–चाँदी के बर्तन व गहने हैं जिनकी जानकारी प्राप्त करने की कौशिस करनी चाहिए एवं उनकी सूचना जिले, राज्य और केन्द्रीय संग्रहालय के अधिकारियों को शिक्षकों के द्वारा भेजी जानी चाहिए।
- गाँवो कस्बो के लोग तथा घमन्तू समुदायों तथा जनजातियों के पास अभी भी असंख्य प्राचीन सांस्कृतिक महत्व की वस्तुओं जैसे गहने, खिलौने, फर्नीचर, उपकरण और लुप्त होते हुए व्यवसायों के उपकरण है जिन्हे शिक्षक खोज कर उनका संरक्षण करने में अपना योगदान दे सकते है। भारत में आकर बसने बाले मानवशास्त्री वेरियर ऐल्विन (Verrier Elvin) ने बस्तर जिले तथा उत्तर–पूर्वी राज्यों की जनजातियों के बीच वर्षो तक अध्ययन किया। इस अवधि में उन्होंने उन जनजातियों की संस्कृतियों के लिए बडा सा संग्रहालय बनवाया, जिसका भारत के अलावा सम्पूर्ण विश्व में भी महत्व है। इसी प्रकार के छोटे–छोटे संग्रहालय अपने विद्यालय, कॉलिज और विश्वविद्यालय में बनवा सकते है।
- कई जातियाँ, जनजातियाँ, समुदाय के व्यवसाय लुप्त हो चुके है या लुप्त होने की कगार पर है, उनकी प्राचीन कलाएँ, कारीगरी समाप्त होने की वजह से उनका पतन होने लगा है, उनको रोकने का काम अध्यापक कर सकते है।प्राचीन लोक साहित्य, लोकनृत्य, लोक कलाएँ, पुरानी हस्त कला, खेलकूद एवम् प्रसाधन के साधन तथा उनसे संबंधित जानकारी को एकत्रित करके जनता के लिए सार्वजनिक किया जा सकता है।
- सभी अध्यापक अपने शिष्यों को फोटोग्राफी के लिए प्रेरित करके प्राचीन व वर्तमान संस्कृतियों के चित्र लेकर उनका संग्रह कर सकते है। इस प्रकार अनेक माध्यमों से प्राचीन संस्कृति के सभी स्वरूपों को जीवित करने का निरन्तर होते रहना चाहिए।

2. संस्कृति के हस्तान्तरण की भूमिका–भारत की संस्कृतिक धरोहर अत्यन्त विशाल, विविध तथा धनाढय है। उसको आने वाली पीढी बताना चाहिए, उनकी विशेषताओं, कुशलताओं को नयी पीढी में पहुँचाना चाहिए। अधिक से अधिक विद्यार्थियों को प्राचीन संगीत, वाद्य यन्त्रों, नृत्य शैलियों, लोक साहित्य, लोक कथाओं आदि के प्रति आकर्षित करना चाहिए ताकि वे अपने व्यक्तिगत और सामूहिक जीवन में उनको उपयोग में लायें। प्राचीन गहनों, वस्त्रों, प्रसाधन के साधनों व वस्तुओं, प्राचीन वास्तुशास्त्रों, प्राचीन चित्रकारी, प्राचीन स्थापत्य व काष्ठकला को अपनाने और सुधारने के लिए उन्हें प्रोत्साहित किया जाना चाहिए। प्राचीन और मध्यकालीन साहित्य कृतियों के प्रति नई पीढी को आकर्षित करने के लिए उनको चुने हुए पाठों के रूप में पाठ्यपुस्तको में रखा जाना चाहिए। प्राचीन लोक संस्कृति में संस्कृत के नाटक,

विभिन्न भाषाओं के वीर रस की कविताएँ और कहानियाँ, छन्द आदि की भरमार रही है, उनको नई पीढी को दिखाना और सिखाना चाहिए। इन सब के प्रति रूचि उत्पन्न करके इन पर आधारित नाटक, सांस्कृतिक आयोजनों को करवाना चाहिए। वर्तमान समय में संचार के अनेक साधन है जैसे–कम्प्यूटर, टेपरिकॉडर, इण्टरनेट, प्रिंटिंग मशीन आदि का प्रयोग करके शिक्षक और विद्यार्थी के साथ–साथ साधारण नागरिक भी हमारी संस्कृति की गौरव गाथा के सभी अंशों का युवा पीढी को हस्तान्तरित कर सकते है।

प्रत्येक दश के अपनी प्राचीन संस्कृति पर गर्व होता है भारत एक प्राचीन गौरवशाली संस्कृति का देश है। उसकी सांस्कृतिक धरोहर केवल सनातन या हिन्दू संस्कृति की ही नहीं अपितु यह भारत के विभिन्न धर्मो एवं जातियों की सांस्कृतिका मिश्रण है। भारतीय सांस्कृतिक धरोहर या विरासत में दो प्रकार की संस्कृतियाँ आती है–

(1) मूर्त संस्कृतियाँ–जैसे कला, नृत्य, वाद्या यन्त्रों को बनाने की कला, चित्रकला, आभूषण बनाने की कला, मूर्तियाँ, मन्दिर, अन्य पूजास्थल, महल, स्तम्भ बनाने की स्थापत्य आदि।

(2) अमूर्त संस्कृतियाँ–विचारों, आदर्शो, भावनाओं को व्यक्त करने वाली रचनाएँ, लोक गीत, भजन, संगीत, कहानियाँ, लोक नृत्य, लोक कथाएँ, चुटकुले, पहेलियाँ आदि।

3. संस्कृति के संवर्धन में शिक्षा की भूमिका–प्राचीन संस्कृति को बनाये रखना जितना आवश्यक है लेकिन उससे भी ज्यादा आवश्यक है, उसका विकास करना, उसमें वृद्धि करना। इसके लिए शिक्षा को मौलिकता तथा सृजनात्मकता को प्रोत्साहित व विकसित करना जरूरी है। विद्यालय में छात्रों को मौलिक चित्र, गीत, कविताएँ, वस्तुएँ बनाने को प्रोत्साहित करना चाहिए, उनकी कृतियों को प्रकाशित, प्रसारित करना चाहिए। नये शोधों, प्रयोगों, परिक्षणों के द्वारा संस्कृति का परिमार्जन व विकास करना चाहिए। यह कार्य माध्यमिक विद्यालयों, महाविद्यालयों तथा विश्वविद्यालयों के अध्यापक अधिक कुशलता के साथ कर सकते है।

लगभग एक हजार वर्ष से हमारी सांस्कृतिक धरोहर का विनाश होना आरम्भ हुआ हैं। मुसलिम शासकों ने भारतीय मन्दिरों, मूर्तियों को नष्ट किया, इसके प्रमाण उत्तर भारत में सर्वत्र मिलते है। अंग्रेजों ने हमारे प्राचीन साहित्य व विज्ञान के ग्रन्थों को नीचा दिखाने और नष्ट करने के लिए अंग्रेजी माध्यम से शिक्षा देना आरम्भ किया। पश्चिमीकरण की जबरदस्ती परिवर्तन प्रक्रिया के फलस्वरूप भारतीय सांस्कृतिक धरोहरों का तेजी से विनाश हुआ। आधुनिकीकरण की प्रक्रिया ने इस विनाश की गति को और तीव्रता प्रदान की।

यह महसूस किया जा रहा है कि हमें अपनी जो भी सांस्कृतिक धरोहर अब बची हुई है, कम से कम उसे तो सही से बनाये रखने का प्रयास करना चाहिए। माता–पिता, शिक्षकों तथा सांस्कृतिक व सामाजिक नेताओं का कर्त्तव्य है कि वे नई पीढी को हमारे विविध प्राचीन नृत्य, गायन, चित्रण, आभूषण निर्माण, सजावट आदि की शैलियों के बारे में बताये और जहाँ भी ऐसी महत्वपूर्ण धरोहरें बची है उन्हें जीवित रखने का प्रयास करें। लोकगीतों और कथाओं को रिकॉर्ड किया जाना चाहिए। लोक नृत्यों को सिखाया जाना चाहिए तथा उनके वीडियो बनाये जाने चाहिए। जो प्राचीन महत्व के अवशेष बचे हैं उन्हें अजायबघरों व संग्रहालयों में जमा करवाया जाना चाहिए। प्राचीन पुस्तके बची हैं उन्हें पुनः मुद्रित करवाया जाना चाहिए तथा उनकी मूल पाण्डुलिपियों को बडे–बडे पुस्तकालयों व संग्रहालयों मे जमा कराना चाहिए। विद्यार्थियों और जनता को उनके महत्व के बारे में बताया जाना चाहिए। जनजातियों में भी कई रोचक चित्रकलाएँ और सृजन कलाएँ है। उनके नमूनों को एकत्रित किया जाना चाहिए।

आज भी हमारी सांस्कृतिक विरासत का बहुत बडा भाग वास्तुशिल्प सौन्दर्य के रूप में मौजूद है। सरकारी अधिकारियों की लापरवाही, धन लाभ की प्रवृत्ति तथा जनता की लापरवाही के कारण यत्र–तत्र–सर्वत्र भारत में प्राचीन इमारतों, मन्दिरों, मूर्तियों, भवनों का दिन–प्रतिदिन ह्यस हो रहा है। शिक्षा के माध्यम से जागरूकता लाकर इसे बचाना जरूरी है।

भारतीय संस्कृति के विषय में प्रमुख कथन

1. "भारतीय सामाजिक संरचना और सांस्कृतिक प्रतिमान की विशेषता एकता के साथ विविधता भी रही है। किसी भी सामान्य प्रेक्षक को विविधता के कारक स्पष्टतया समझ आते हैं। लेकिन विविधता तस्वीर का एक पक्ष है। एकता बनाने वाले कारक भी रहे है। हिन्दू धर्म में एकता अन्तर्निहित है।"
   –समाजशस्त्री प्रो. एम. एन. श्रीनिवास
2. "आज वक्त का तकाजा एक धर्म होना नहीं है, अपितु विभिन्न धर्मों के अनुयायियों में परस्पर आदर–भाव और सहन–शक्ति रखने का है। हमकों अन्तिम सीमा तक पहुँचने के बजाय विभिन्नता मे एकता तक पहुँचता है।" **–महात्मा गाँधी**
3. "निःसन्देह भारत में अन्तर्निहित एकता है जो भौगोलिक और राजनैतिक सत्ता से ऊपर है। वह एकता रक्त, रंग, भाषा, परिभाषा, गुणों और मतों से कहीं ऊपर है।" **–इतिहासकार बिन्सेण्ट स्मिथ**

सन्दर्भ

1. रूहेला. एस. पी, (2012) विकासोन्मुख भारतीय समाज में शिक्षक और शिक्षा, अग्रवाल पब्लिकेशन आगरा।
2. सिहं, योगेन्द्र, (2016), भारतीय परम्परा का आधुनिकीकरण, रावत पब्लिकेशन, जयपुर।
3. सिन्हा, आलोक, (2014–15), भारतीय समाज,ग्रीण लीफ पब्लिकेशन, वाराणसी।
4. त्यागी, गुरसरनदास, (2016), श्री विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा।

प्रसावराव जामि: व्यक्तिगत परिचय

पिता का नाम : स्वर्गीय श्रीमान पोलय्या जामि, **माता का नाम** : स्वर्गीय श्रीमती चिन्नम्मी जामि

धर्मपत्नी का नाम : श्रीमती सावित्री जामि

शैक्षणिक योग्यताए : हिंदी शिक्षक, एम ए (हिंदी), पोस्ट ग्रैजुएशन डिप्लोमा इन ट्रांसलेशन स्टडीज इन हिंदी, बैचलर ऑफ डिग्री स्पेशल हिंदी, राष्ट्रभाषा प्रवीण, मध्यमा विशारदा, पीजीडीटीसी

प्रकाशन कार्य

मौलिक पुस्तकें: हिंदी भाषा एवं व्याकरण (2021)

संपादित आलेख पुस्तकें: साहित्य विमर्श (2021), साहित्य मंथन (2022), साहित्य तरंग (2022), साहित्य और समाज (2023), भाषा शिक्षण (विविध विमर्श) (2023), भारत (विविध विमर्श) (2024), हिंदी साहित्य का इतिहास (2024), पर्यावरण अध्ययन (2024), साहित्य में तुलनात्मक अध्ययन (2024), शिक्षा मनोविज्ञान (2024), भारतीय साहित्य (2024), विकसित भारत@ 2047 (2025), बाल साहित्य (2025), भारतीय दर्शनशास्त्र (2025), शिक्षा और समाज (2025)

संपादित कविता पुस्तकें: स्वतंत्र भारत का स्वतंत्र साहित्य (2022), काव्य धारा (2022)

संपादित कहानी पुस्तकें: कथा सरोवर (2022)

सम्पादक-मंडल आलेख की पुस्तकें: भाषा और साहित्य शिक्षण (2022), राष्ट्रीय शिक्षा नीति (तुलनात्मक अध्ययन)(2023), G20 Nation: Global partnership for economic and social inclusions) (2024) सामाजिक उद्यमिता एवं विकास (2024), भाषा शिक्षण शास्त्र (2024)

संपादक-मंडल कविताओं की पुस्तकें: भारत की आजादी का अमृत महोत्सव (2021), रेशमी सफर (2022), महकते फूल (2022), AN ANTHOLOGY ON FRIENDSHIP (A SACRED BOND) (2022), Yaadein (A TAPESTRY OF TIMELESS MEMORIES)(2024), FESTIVAL(2024), NATURE (2025)

सम्पादक-मंडल कहानियों की पुस्तकें : SHORT STORIES ON HUMANITY

सह-सम्पादक मंडल पत्रिका: स्वदेश भारत (2022-23), स्वदेश भारत (2024-25)

प्रकाशित कार्य: 1मौलिक पुस्तक में व्याकरण, 53 पुस्तकों में साहित्यिक आलेख प्रकाशन किए गए, 3 पुस्तकों में साहित्यिक कहानियां, 25 पुस्तकों में कविताएं और 3 पुस्तकों में साहित्यिक जीवन परिचय प्रकाशन की गई।

सम्मान:

50 से भी अधिक राष्ट्रीय तथा अंतरराष्ट्रीय सम्मानों से विभूषित

विद्यासागर (विक्रमशिला हिंदी विद्यापीठ भागलपुर, बिहार)2025, विद्यावाचस्पति (विक्रमशिला हिंदी विद्यापीठ भागलपुर, बिहार)2025, विद्यावाचस्पति (काशी हिन्दी विद्यापीठ)2025, साहित्यानुरागी (त्रिभुवन विश्वविद्यालय काठमांडू, नेपाल)2023, स्वदेश भूषण सम्मान (स्वदेश संस्थान भारत)2025, स्वदेश भारत गौरव सम्मान (स्वदेश संस्थान भारत)2023, GENIUS OF INDIA -2025 (SWADESH SANSTHAN BHARAT, AYODHYA, UTTAR PRADESH, INDIA), EXCELLENT INNOVATIVE TEACHER OF INDIA -2025 (SWADESH SANSTHAN BHARAT, AYODHYA,UTTAR PRADESH,INDIA), INTERNATIONAL BEST GURU -2025 (GSP INDIA, TELANGANA, INDIA)

जे.टी.एस. पब्लिकेशन

बी-508 गली नं.17,विजय पार्क,दिल्ली -110053

मो. 08527460252,9990236819

ई मेल : jtspublications@gmail.com

ब्रांच ऑफिस : ए-9 नवीन इनक्लेव गाजियाबाद, उत्तर प्रदेश, पिन -201102

मूल्य : १५००.०० रूपये

ISBN 978-93-49496-05-7